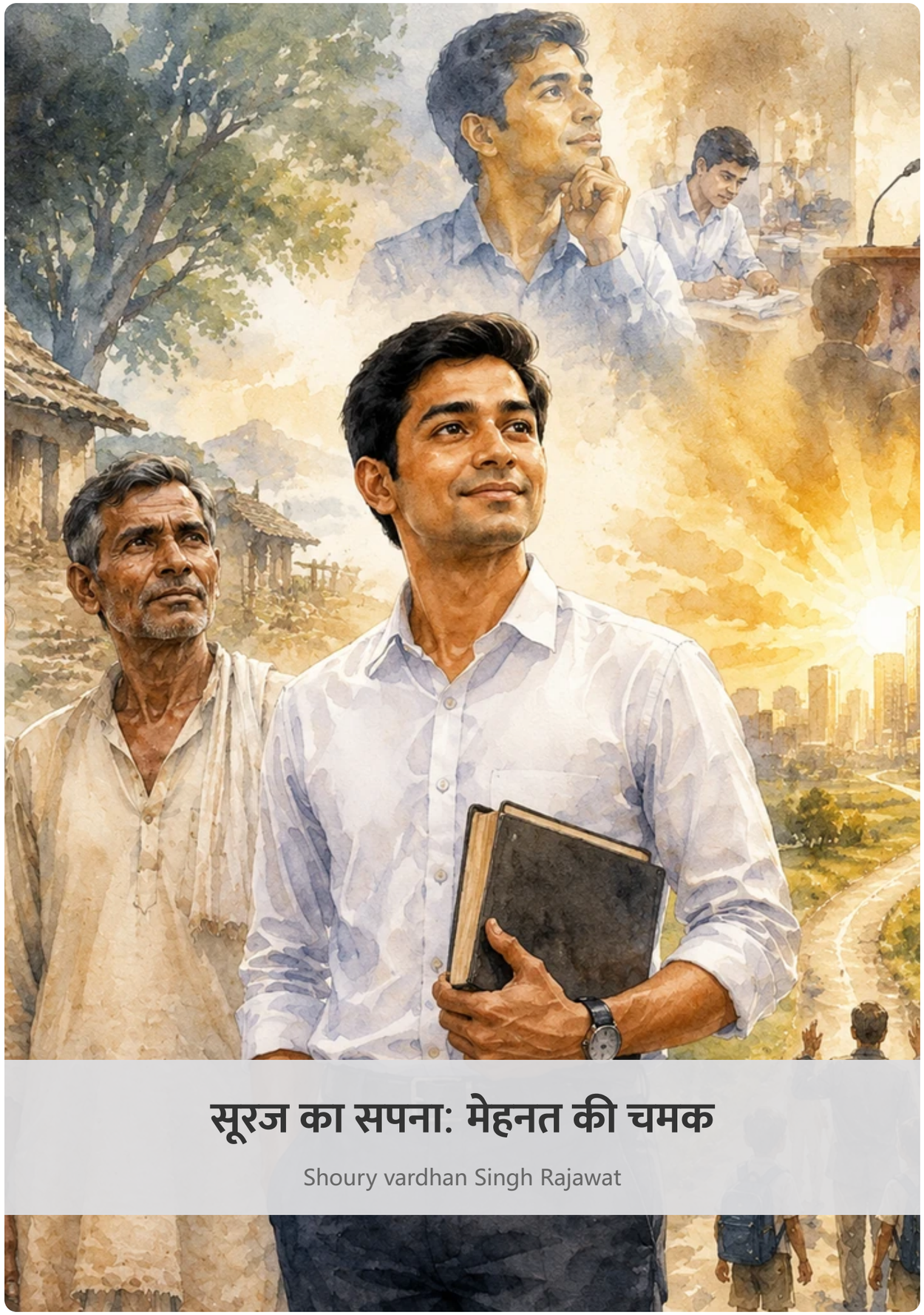

सूरज का सपना: मेहनत की चमक

Shoury vardhan Singh Rajawat

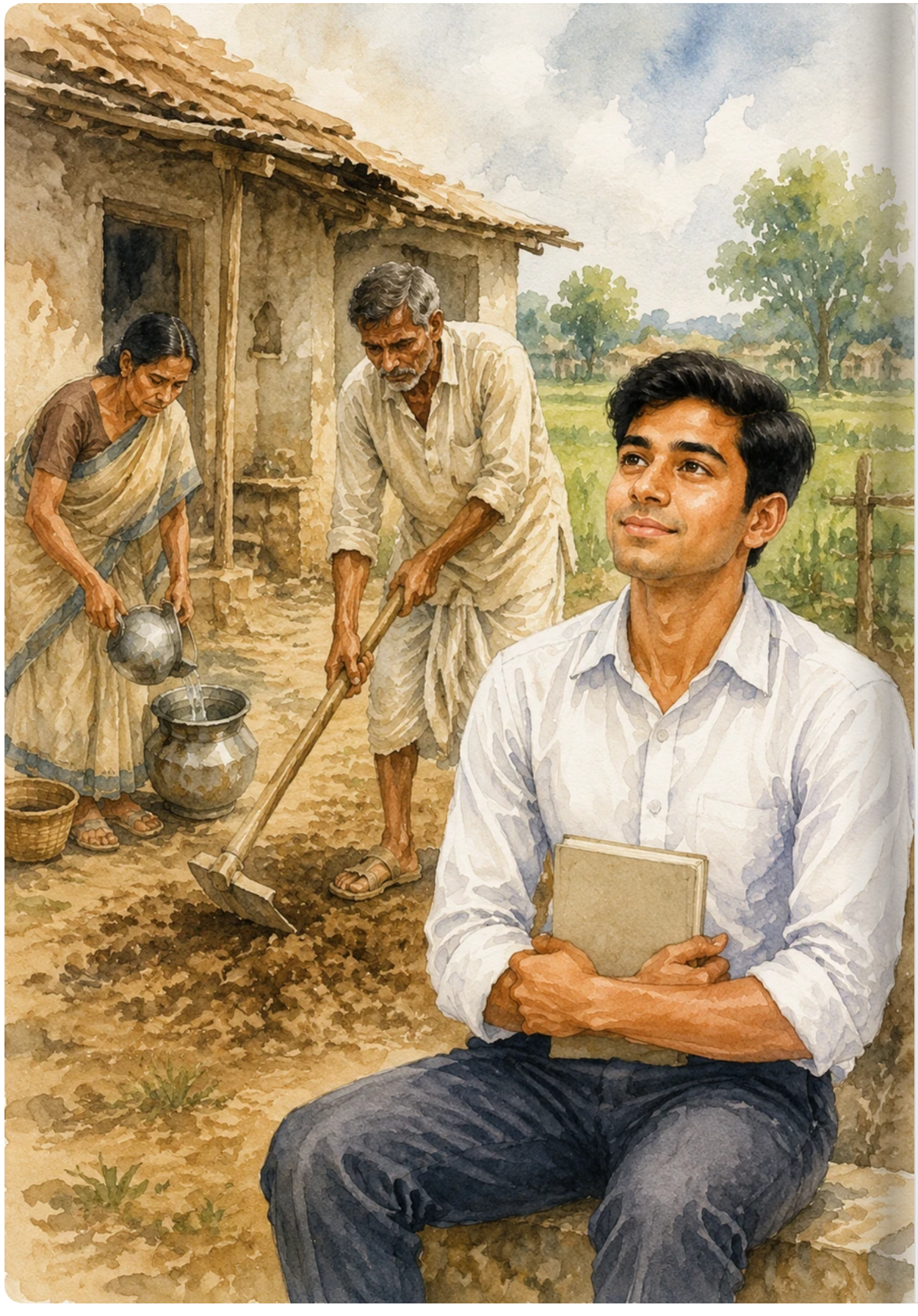

एक छोटे से गाँव में सूरज नाम का एक लड़का रहता था, जिसके माता-पिता खेतों और घरों में कड़ी मेहनत करते थे। घर की स्थिति खर थी, लेकिन सूरज की आँखों में हमेशा कुछ बड़ा करने की चमक रहर्त थी।

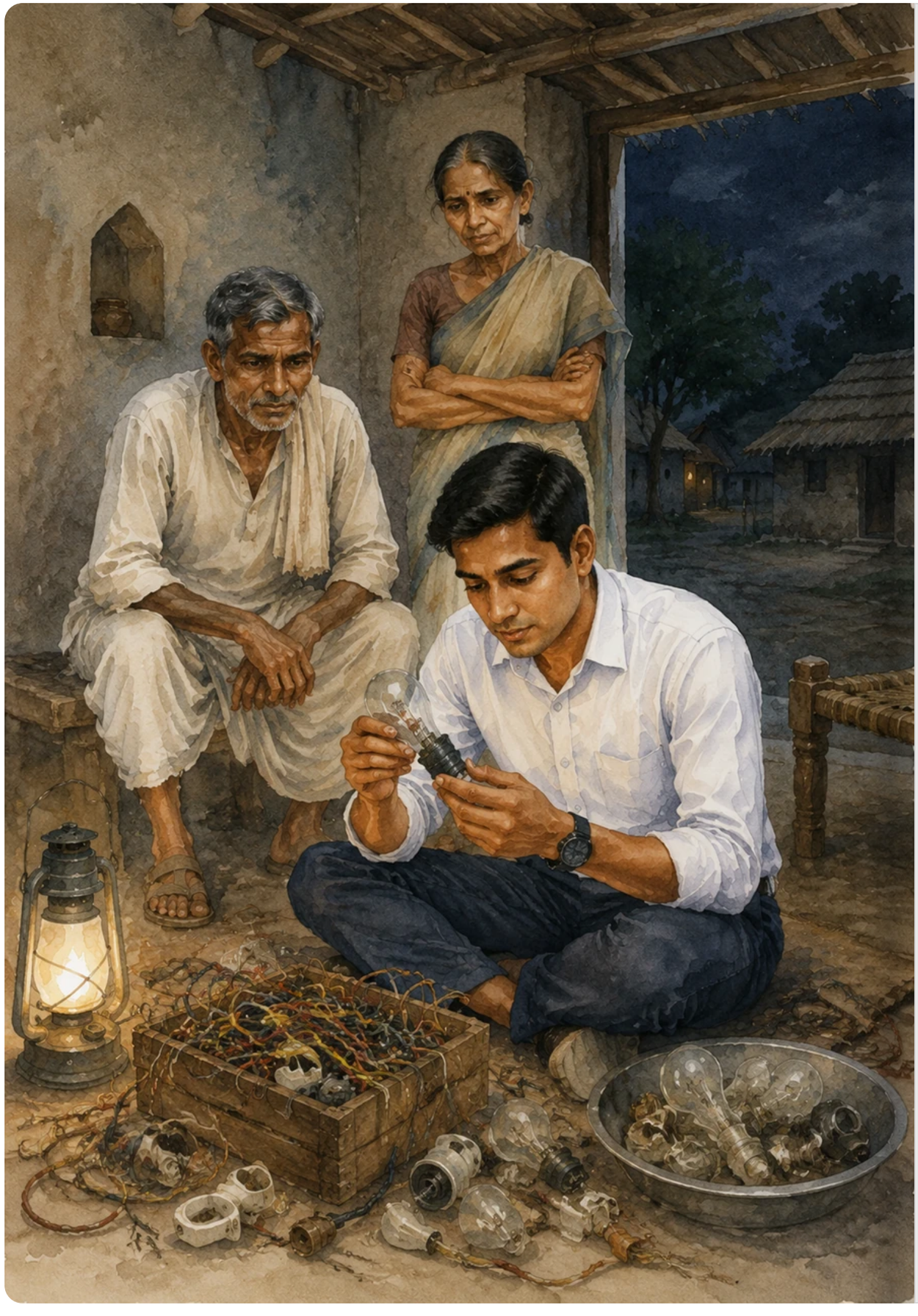

गाँव में अक्सर बिजली चली जाती थी, जिससे चारों ओर अंधेरा छ
जाता था। सूरज पुराने तारों और खराब बल्बों को इकट्ठा करता और उ
गौर से देखकर समझने की कोशिश करता कि वे कैसे काम करते हैं।

जब गाँव वाले सूरज को तारों के साथ खेलते देखते, तो वे उसक मज़ाक उड़ाते थे। वे कहते थे कि एक गरीब घर का लड़का कभी बड़ इंजीनियर नहीं बन सकता, लेकिन सूरज उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे था।

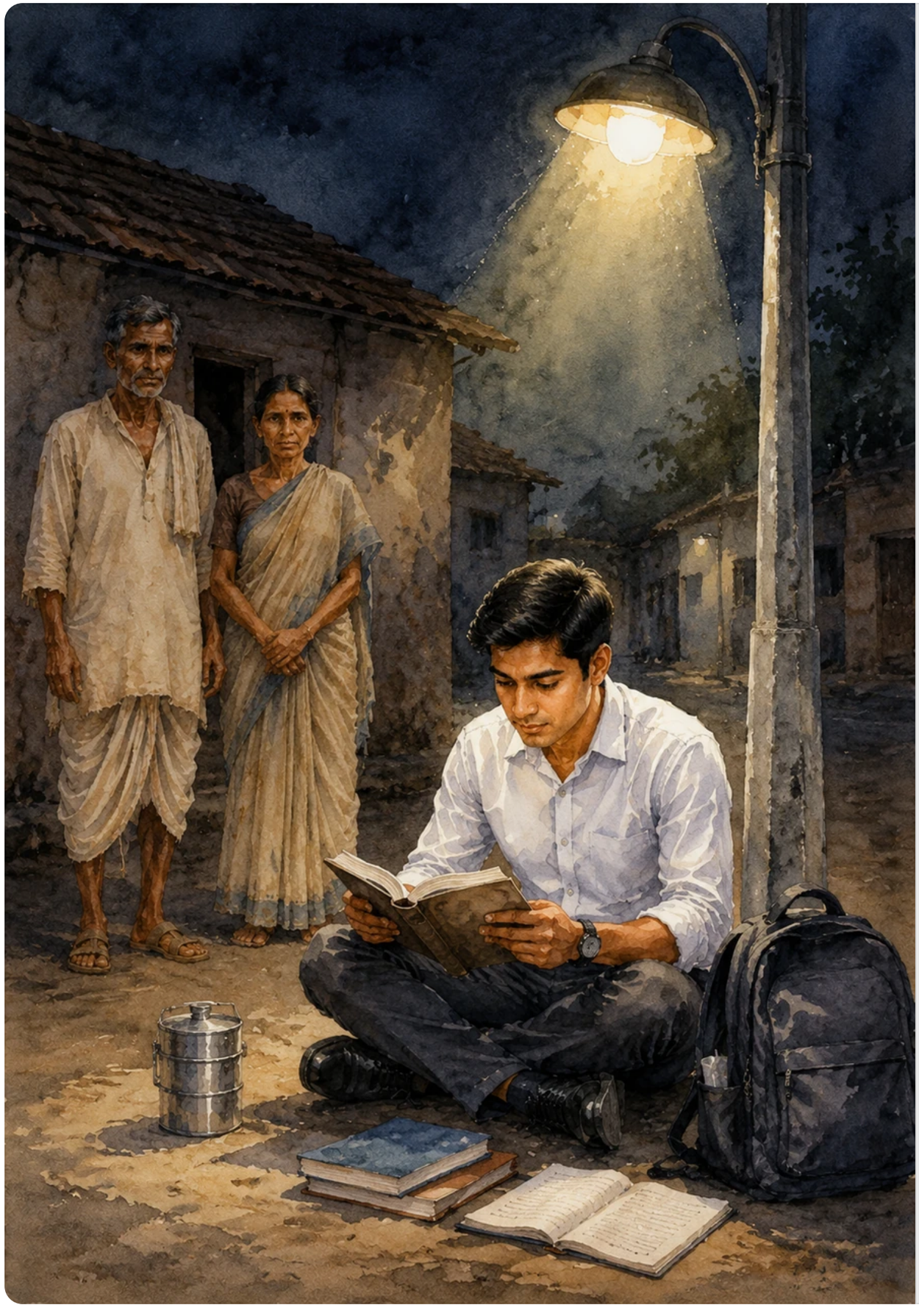

रात के समय जब घर में रोशनी नहीं होती थी, तो सूरज सड़क के लैंप के नीचे बैठकर अपनी किताबें पढ़ता था। कई बार उसे भूख भी लगती थी, लेकिन उसका ध्यान सिर्फ अपनी पढ़ाई और सपनों पर होता था।

एक दिन स्कूल में विज्ञान की प्रतियोगिता हुई, जहाँ सूरज ने कब के सामान से एक ऐसा पंखा बनाया जो बिना बिजली के चल सकता १ उसकी इस अनोखी कलाकारी को देखकर हर कोई दंग रह गया।

सूरज की प्रतिभा को देखकर उसके शिक्षक ने उसे बहुत सराहा और शहर के एक बड़े कॉलेज में दाखिला दिलाने में मदद की। यह सूर के जीवन का एक नया और सुनहरा मोड़ था।

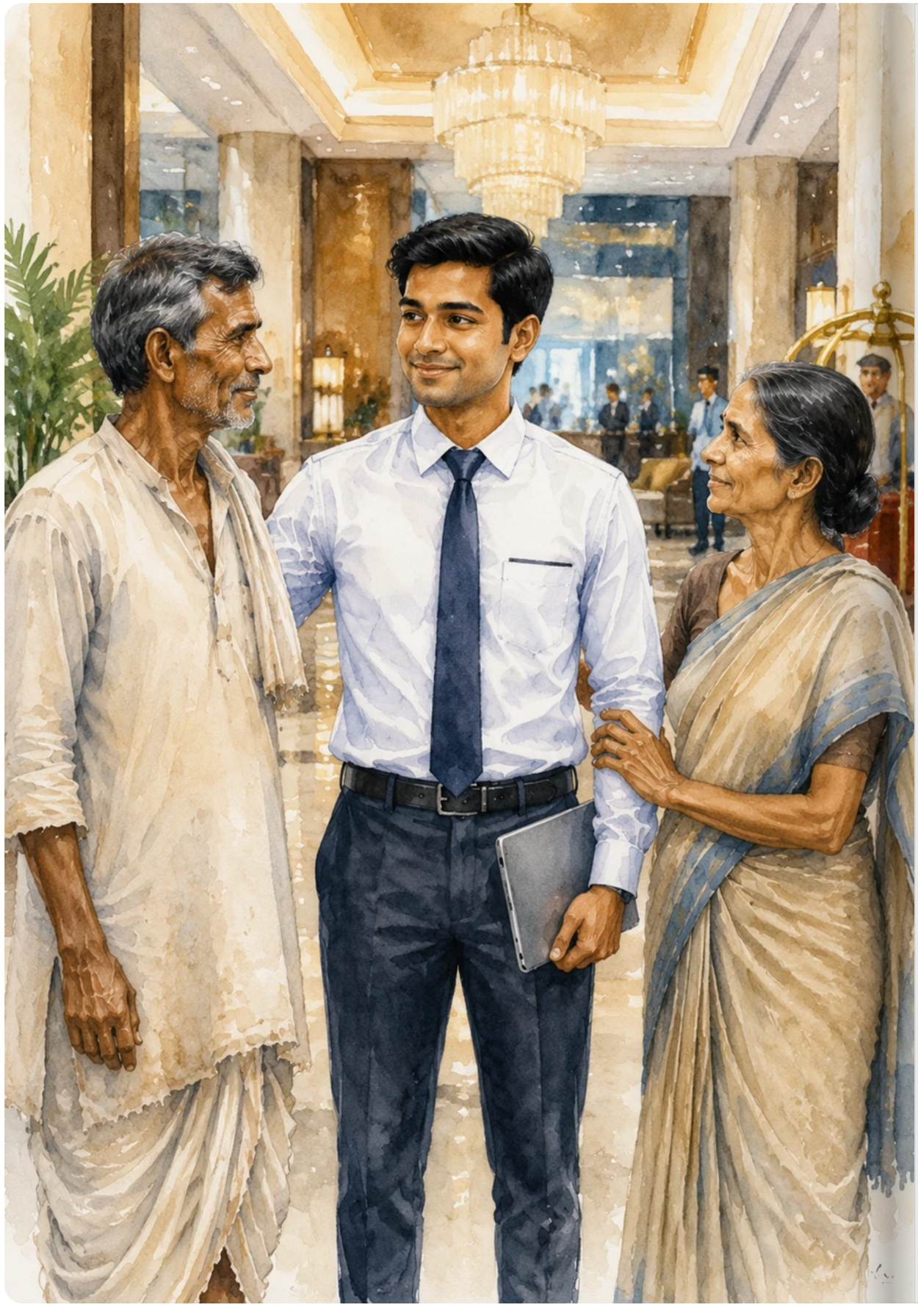

सालों की कड़ी मेहनत और लगन के बाद, सूरज एक बड़े शहर
नामी होटल में चीफ इंजीनियर बन गया। अब वह वही कुशल इंजीनि
था, जिसका सपना उसने बचपन में देखा था।

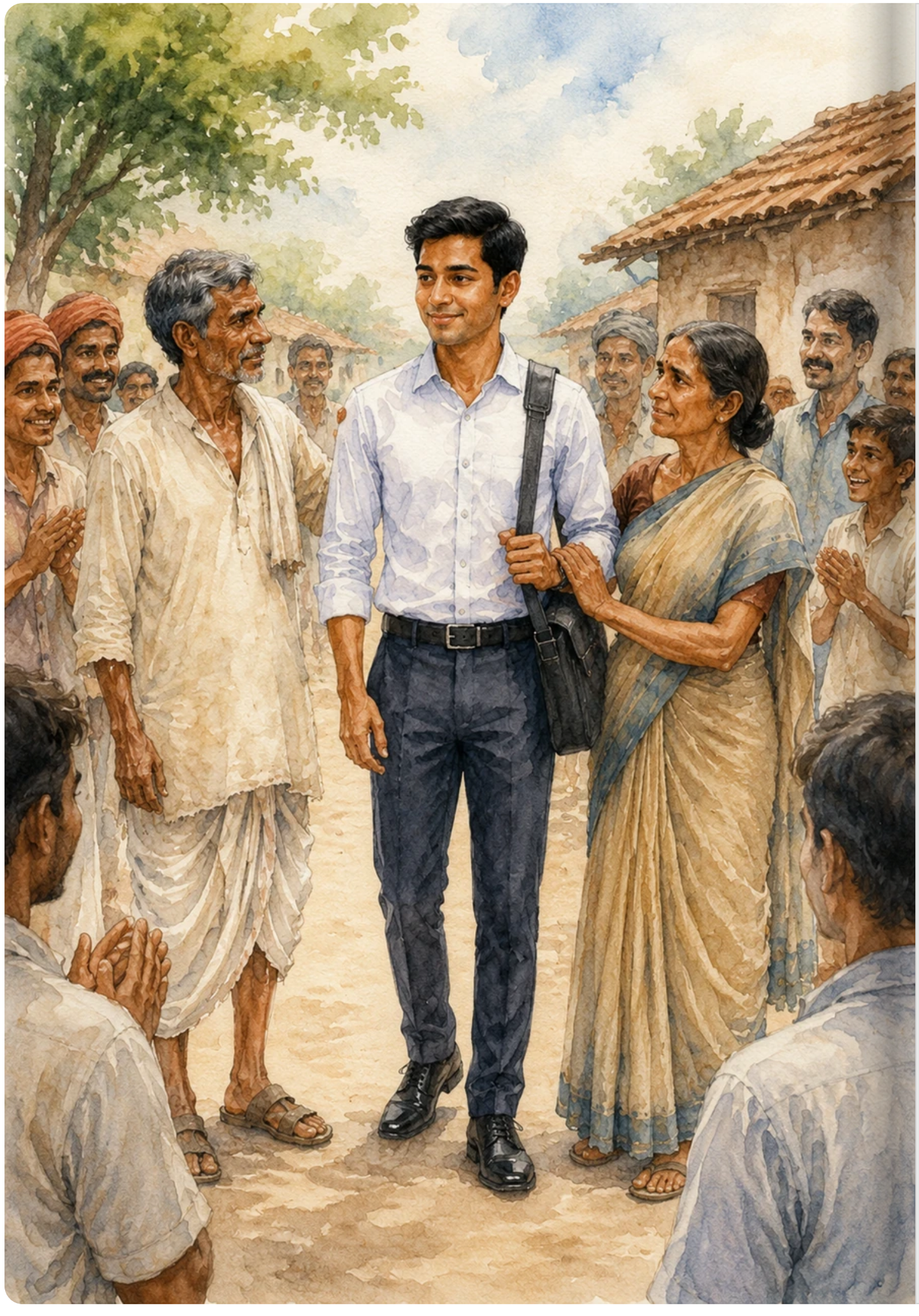

अपनी सफलता के बाद, सूरज एक दिन अपने पुराने गाँव वापस लौटा। उसे देखकर गाँव वाले हैरान थे और अब वे उस पर गर्व कर रहे जिसका कभी उन्होंने मज़ाक उड़ाया था।

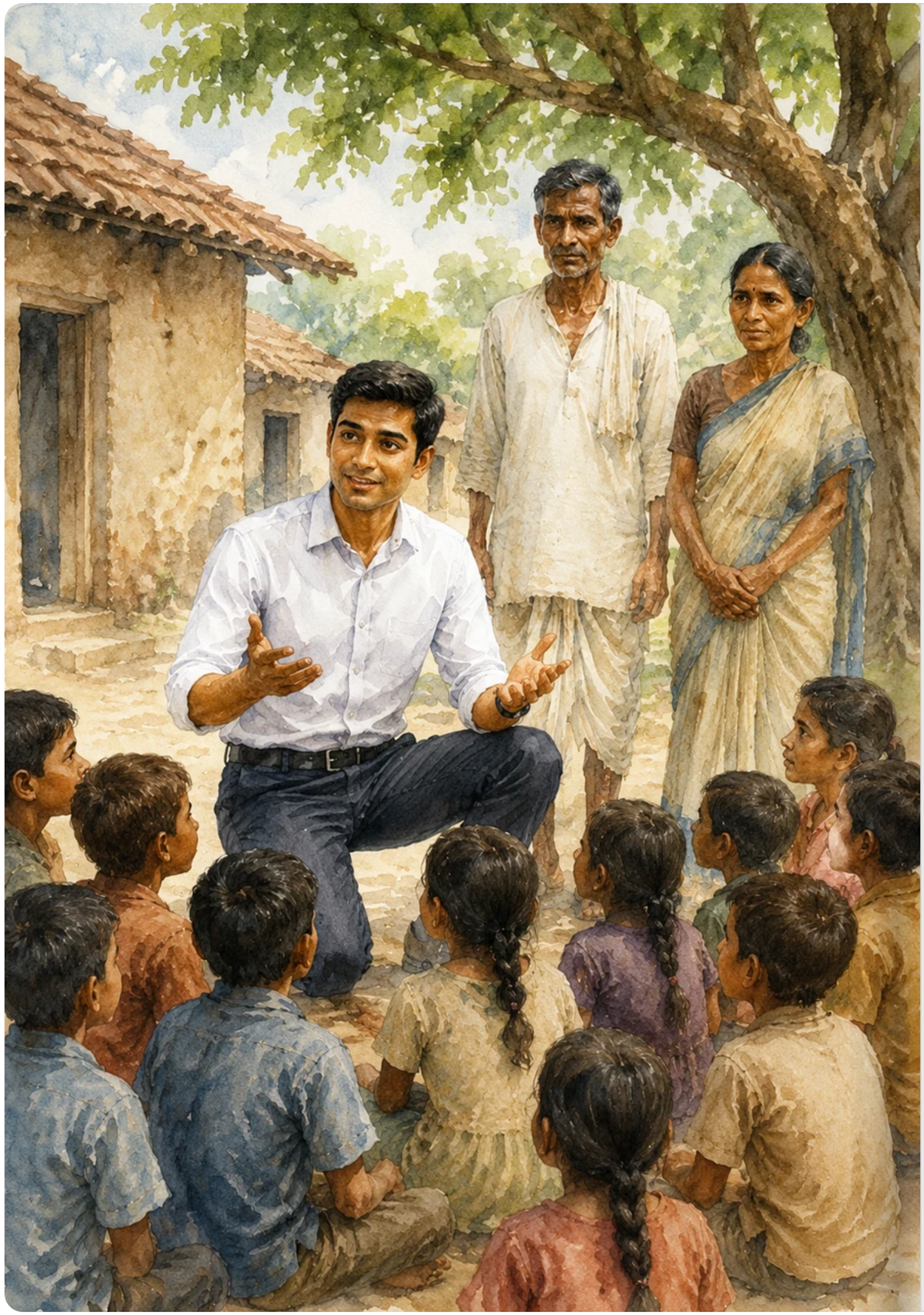

सूरज ने गाँव के बच्चों को इकट्ठा किया और उन्हें समझाया कि गरीबी कभी सपनों के आड़े नहीं आती। उसने कहा कि केवल मेहनत छ देने से ही सपने टूटते हैं, इसलिए कभी हार नहीं माननी चाहिए।

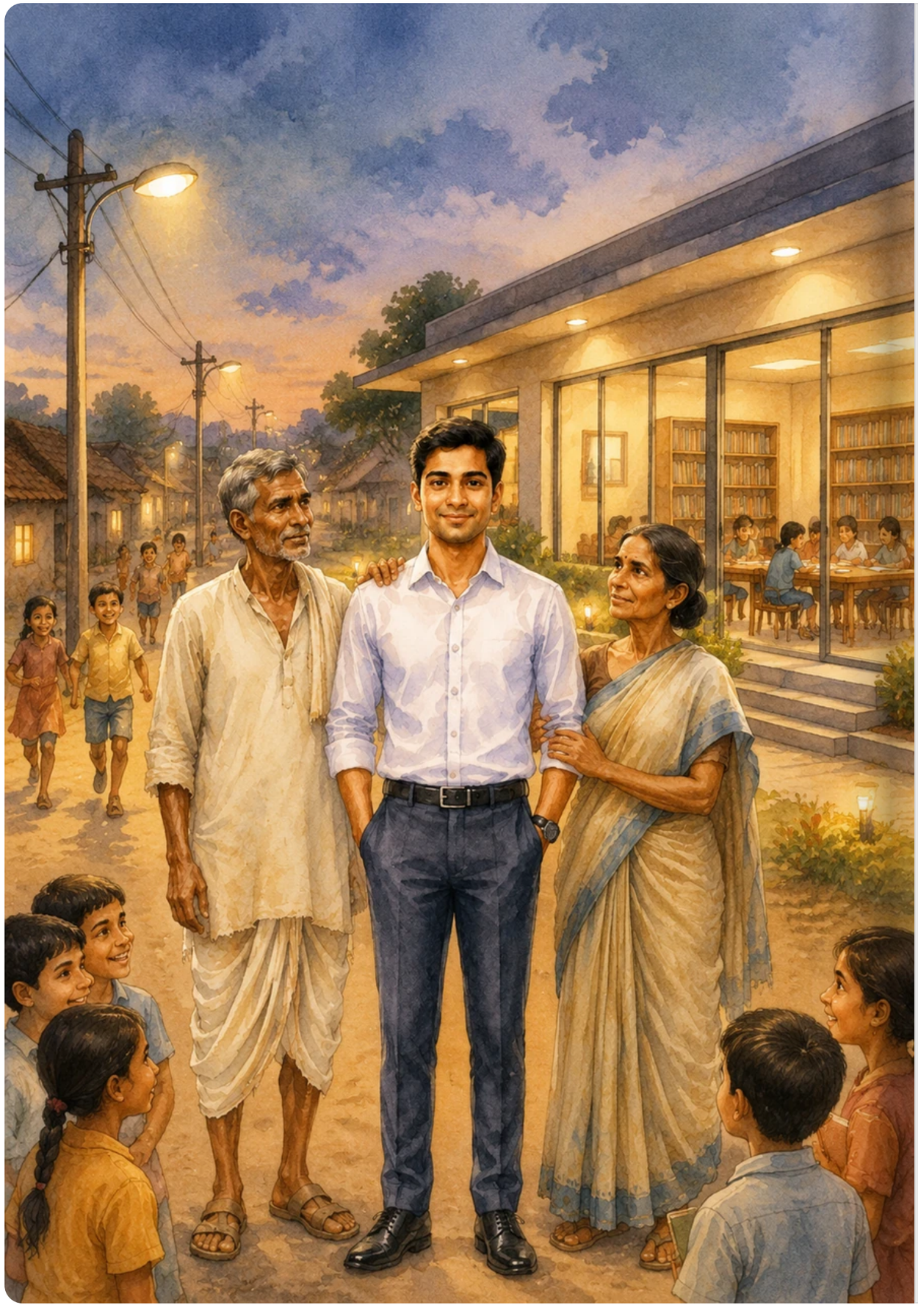

सूरज ने पूरे गाँव में नई बिजली की लाइनें लगवाईं और बच्चों के लिए एक आधुनिक लाइब्रेरी बनवाई। आज पूरे गाँव में रोशनी थी और सूरज के चेहरे पर एक सुकून भरी मुस्कान।